माँ की पाती बेटी के नाम

प्रेषक,

पायल मालानी
डिप्टी गंज, सेठों वाली गली,
बुलन्दशहर (उ0प्र0)
मो0नं0 – 8273897223

दिनांक – 08.08.2018

मेरी प्यारी बेटी राधिका

शुभ आशीष

आशानुरूप तुम स्वस्थ व प्रसन्न होंगी। तुम्हे अपने छात्रावास में पहुँचे आज पूरे दस दिन हो गये है। तुम्हारे बिना घर का आँगन सूना लगता है, तुम्हारा हँसना, पापा से झगड़ना, भाई को चिढ़ाना एक फिल्म की भाँति पूरे दिन मेरे सामने चलता रहता है। हर शाम ऐसा लगता है जैसे तुम एक्टिवा का होर्न बजाते हुई आँओगी। घर में तुम्हारी कमी बहुत खलती है। पर कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है। यह खत तुम्हे घर की याद दिलाने के लिए नहीं बल्कि तुम्हारा लक्ष्य याद दिलाने के लिए और मुझे उम्मीद है तुम अपना लक्ष्य भूलोगी नहीं। तुम वहाँ अपने और घर में सबके सपने पूरे करने गई हो। बेटी तुम पहली बार घर से दूर गई हो इसलिए मैं तुम्हे समझा रही हूँ कि आज भी दुनिया में सपने ओझल होने में वक्त नहीं लगता। अपनी राह में भटकने में देर नहीं लगती। लोग अच्छे और बुरे दोनों तरह के होते हैं और उनमें चुनना और समझना तुम पर है। कुछ दोस्त तुमकों तुम्हारे सपने पूरे करने में साथ देंगे , तो कुछ तुमको भुलाने में इसलिए अपने सपने का ख्याल रखना और अपना भी।

आजकल का माहौल सही नहीं है, इसलिए अपनी रक्षा स्वयं करना इसके लिये मोबाईल में 100 नं0 डालकर रखना पर्स में मिर्च स्प्रे रखना, किसी भी ऑटो या बस में बैठने से पहले उसका नम्बर नोट कर लेना। यह सब सुरक्षित रहने के लिए थे, अहतियात जरूरी है, लड़कियाँ किसी भी कार्य में लड़कों से कम नहीं पर जागरूकता की कमी है। कोई भी व्यक्ति तुम्हारे साथ किसी भी प्रकार की अभद्रता करता है, तो उसे सहना नहीं बल्कि डटकर सामना करना ''लड़की हो, कोमल हो, लेकिन कमजोर नहीं''।

बेटा आधुनिकता मात्र कपड़ों से नहीं आती बल्कि विचारों से आती है। विचार ही व्यक्ति को महान बनाते है। तुम अपने घर में सबसे बड़ी हो तुम्हारा भाई तुम्हारा ही अनुकरण करेगा। अतः तुम्हे उसका आदर्श बनना है। जब तुम आई0ए0एस0 ऑफिसर बन जाओगी तो पूरी निष्ठा व ईमानदारी के साथ देश की सेवा करना। जानती हो मेरी आँखे उसी दिन का सपना देखती है। आगे तुम अपने जीवन पथ पर सफल होगी। ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

अपने सभी गुरूजनों का सम्मान करना। मैं जानती हूँ बेटा घर से दूर यह सब मुश्किल है पर असम्भव नहीं। बचपन में तुम एक कविता गाती थी। मुझे उसकी चन्द लाइन आज भी याद है।

''लहरों से लड़कर, नौका पार नहीं होती।

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।।

अपनी पढ़ाई का पूर्ण ध्यान रखना, समय का सदुपयोग करना। अपने खाने–पीने का ध्यान रखना।

तुम्हे अपने छात्रावास कैसा लगा, वहाँ का खाना पीना कैसा है। मुझे पत्र द्वारा सूचित करना। पापा तुम्हे बहुत याद करते हैं, क्योंकि तुम पहली बार अपने पापा की आँखों से ओझल हुयी हो। पापा को तुम्हारी हर समय चिन्ता लगी रहती है। तुम अपने पापा का अभिमान हो, इस मान को सदैव बनाये रखना बेटी फिर से कह रही हूँ अपना ध्यान रखना व पढ़ाई का पूरा ध्यान रखना।

तुम्हारे पापा की ओर से तुम्हे आर्शीवाद। सदा खुश रहो!

तुम्हारी माँ – पायल